हिमNIC इंफोर्मेटिक्स
एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा एक त्रैमासिक संवाद पत्र
खंड 02 | अंक 03 | जुलाई - सितम्बर, 2024
https://nichimachal.nic.in/news-letter

स्वामित्व

आबादी देह/लाल डोरा में संपत्ति का स्वामित्व

नवपरियोजना

स्वामित्व योजना (SVAMITVA – ग्रामीण आबादी का सर्वेक्षण एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ मानचित्रण) ग्रामीण क्षेत्रों के आबादी/लाल डोरा में संपत्ति का स्वामित्व देने की दिशा में पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। ग्रामीण क्षेत्रों के मालिकों को कानूनी स्वामित्व कार्ड (संपत्ति कार्ड/स्वामित्व पत्र) प्रदान करने के लिए आवासीय भूमि की पांच सेंटीमीटर तक की सटीकता के साथ, ड्रोन तकनीक का उपयोग करके मैपिंग की जाती है।

योजना के कार्यान्वियन के प्रभावी अनुश्रवण में विभाग की सहायता के लिए, राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश द्वारा स्वामित्व एप्लिकेशन विकसित की गई। सर्वप्रथम, ग्राम राजस्व अधिकारी (पटवारी), पटवार क्षेत्र में आने वाले गांवों के लिए स्वामित्व योजना की स्थिति का अद्यतन करते हैं। उसके उपरांत यह एप्लिकेशन, विभाग को भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा भू-सर्वेक्षण के उपरांत प्रदान किए गए ऐट्रीब्यूट डेटा के डिजिटल रूपांतरण की सुविधा प्रदान करती है ताकि फॉर्म-डी बनाया जा सके। पटवारी से लेकर राज्य प्राधिकारियों तक सभी को ड्रिल-डाउन डैशबोर्ड भी उपलब्ध करवाया गया है। भू-अभिलेख के पुन: उपयोग के लिए इस सॉफ्टवेयर को ई-हिमभूमि सॉफ्टवेयर के साथ भी एकीकृत किया गया है।

प्रमुख विशेषताऐं

- प्रत्येक राजस्व गांव की आबादी देह के लिए, जमाबंदी के अनुरूप फॉर्म-डी तैयार करने की सुविधा।
- कानूनगो तथा तहसीलदार को क्रमशः कार्यप्रवाह एवं रोल आधारित फॉर्म-डी प्रविष्टियों के सत्यापन तथा अनुमोदन की सुविधा।
- राजस्व ग्राम के आबादी देह का सर्वेक्षण मानचित्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा एक एकल पी.डी.एफ. फाइल (PDF File) के रूप में तैयार किया जाता है, जिसमें प्रत्येक पृष्ठ पर एक सर्वेक्षण संख्या होती है। पी.डी.एफ. को पटवारी द्वारा स्वामित्व एप्लिकेशन में अपलोड किया जाता है। एकल पी.डी.एफ. को प्रत्येक संपत्ति संख्या के लिए विभाजित किया जाता है।
- फॉर्म-डी को अंतिम रूप देने के बाद, पटवारी एक या अधिक मालिकों वाली संपत्ति के लिए, प्रत्येक मालिक का एक संपत्ति कार्ड तैयार करता है। प्रॉपर्टी कार्ड, ऐट्रीब्यूट डेटा के साथ-साथ सर्वेक्षण संख्या के स्थानिक मानचित्र को भी दर्शाता है।
- प्रॉपर्टी कार्ड को डिजिलॉकर के साथ भी एकीकृत किया गया है। नागरिक अपनी विशिष्ट संपत्ति संख्या या सर्वेक्षण संख्या के साथ जुड़े फोन नंबर के आधार पर अपने संपत्ति कार्ड को डाउनलोड कर सकते हैं।
- इस सॉफ्टवेयर को हिम परिवार रजिस्टर के साथ भी एकीकृत किया गया है।

वर्तमान स्थिति

स्वामित्व परियोजना का उद्देश्य, प्रदेश के सभी राजस्व गांवों में उपलब्ध आबादी देह खसरों को कंप्यूटरीकृत करना है। पायलट कार्यान्वियन के रूप में यह परियोजना, जिला हमीरपुर में लागू की गई है तथा श्री सुखविंदर सिंह, माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश द्वारा 16 अगस्त, 2024 को ज़िला हमीरपुर की विभिन्न तहसीलों के लाभार्थियों को संपत्ति कार्ड वितरण के साथ ही राज्य में स्वामित्व परियोजना को औपचारिक रूप से शुरू किया गया।

अतिथि अनुभव

सुश्री रीतिका, भा.प्र.से.
निदेशक भू-अभिलेख, हिमाचल प्रदेश

मैं, हिमाचल प्रदेश में स्वामित्व योजना के सफल कार्यान्वयन में राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र (एन.आई.सी.), शिमला को उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। विभिन्न सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों और उपयोगकर्ताओं के अनुकूल डैशबोर्ड के विकास ने, भू-अभिलेख प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने और पारदर्शिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
इन डिजिटल नवाचारों ने, भारत सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप, ग्रामीण परिवारों को स्वामित्व अधिकार प्रदान करने के हमारे प्रयासों को अत्याधिक सरल एवं सुदृढ़ किया है। एन.आई.सी. के प्रौद्योगिकी-संचालित दृष्टिकोण ने अधिकारियों को योजनाओं की प्रगति के अनुश्रवण, चुनौतियों का समाधान करने और भू-नक्शा तथा प्रलेखन में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए सशक्त बनाया है।

मैं, इस परियोजना को सफल बनाने में, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के सभी सदस्यों को उनके समर्पण और तकनीकी विशेषज्ञता के लिए पुनः धन्यवाद देती हूं। एन.आई.सी. द्वारा किए गए उत्कृष्ट प्रयासों ने स्वामित्व योजना के लक्ष्यों को साकार करने और हिमाचल प्रदेश में भू-सुधार के उद्देश्य को मूर्तरूप देने में बहुमूल्य योगदान दिया है।

टेक टिप्स

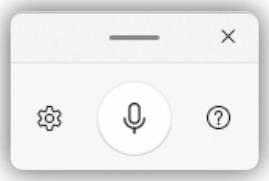

शब्दों को बोल कर टेक्स्ट में परिवर्तित करना

विंडोज़ ऑपरेटिंग सिस्टम में बोले गए शब्दों को टेक्स्ट में परिवर्तित करने के लिए, वर्ड अथवा नोटपैड आदि किसी भी टेक्स्ट एडिटर एप्लिकेशन को खोलें। डिक्टेशन शुरू करने के लिए विंडोज कुंजी + एच दबाएं। डिक्टेशन टूलबार में एक माइक्रोफ़ोन आइकन दिखाई देगा। अपने माइक्रोफ़ोन में स्पष्ट और स्वाभाविक रूप से बोलें। विंडोज़ स्पीच रिकॉग्निशन आपके द्वारा बोले गए शब्दों को टेक्स्ट में परिवर्तित करेगा। यदि परिवर्तित टेक्स्ट में त्रुटियाँ हों, तो आप इसे स्वयं अपने स्तर पर भी संपादित कर सकते हैं। डिक्टेशन बंद करने के लिए, पुनः विंडोज कुंजी + एच दबाएँ।

नवीनतम गतिविधियां

- एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के सभी सदस्यों द्वारा 12 से 15 अगस्त, 2024 तक "एक पेड़ माँ के नाम अभियान" के अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया।
- "हर घर तिरंगा अभियान" में सभी सदस्यों ने भाग लिया और 09 से 15 अगस्त, 2024 तक अपने घरों एवं कार्यालयों पर तिरंगा फहराया।
- एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा 12 अगस्त, 2024 को "नशा मुक्त भारत अभियान" के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में 14 से 28 सितंबर, 2024 तक "हिंदी पखवाड़ा" भी आयोजित किया गया।
- एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के सभी सदस्यों द्वारा, 17 सितंबर, 2024 से 02 अक्टूबर, 2024 तक मनाए जा रहे "स्वच्छता अभियान – 2024" में सक्रिय रूप से भाग लिया जा रहा है।
- 16 अगस्त, 2024 से 15 नवंबर, 2024 तक मनाए जा रहे "सतर्कता जागरूकता अभियान" में भी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

गंतव्य

करेरी झील ट्रेक

हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा घाटी में धर्मशाला के निकट, धौलाधार पर्वतीय श्रृंखला में स्थित करेरी झील, एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला साहसिक ट्रेक है। प्राकृतिक सुंदरता एवं रोमांचकारी चुनौतियों से भरा यह ट्रेक, लगभग 10 कि.मी. लंबा है।

विभिन्न वनस्पतियों, जीवों और लुभावने परिदृश्यों से जीवंत यह ट्रेक, प्रकृति प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है। परिदृश्य में घने बान और अल्पाइन के वृक्ष और संकरी घाटियों से होकर लियूंड नामक जलधारा बहती है। करेरी झील तक का ट्रेक सामान्य रूप से कम कठिन माना जाता है, जो नौसिखियों और अनुभवी दोनों प्रकार के ट्रेकर्स के लिए उपयुक्त है। करेरी झील (2934 मीटर) तक पहुंचने में लगभग 4-5 घंटे लगते हैं। लगातार चढ़ाई, उतराई के मिश्रण वाला यह ट्रेक मनमोहक जंगलों और सुरम्य हरी-भरी पहाड़ियों से होकर गुजरता है, जिसमें बर्फ से ढकी चोटियाँ, झरने और हरे-भरे पर्वतों के शानदार दृश्य दिखाई देते हैं।

करेरी, धौलाधार पर्वत में मिनक्यनी चोटी के ठीक नीचे एक सुंदर हिमनद झील है। झील का पारदर्शी साफ़ पानी, आस-पास की चोटियों को प्रतिबिंबित करते हुए एक मनमोहक दृश्य पैदा करता है। झील दिसंबर की शुरूआत से मार्च-अप्रैल तक जमी रहती है। रात के समय में करेरी झील, तारों एवं आकाश दर्शन के लिए आदर्श स्थान है।

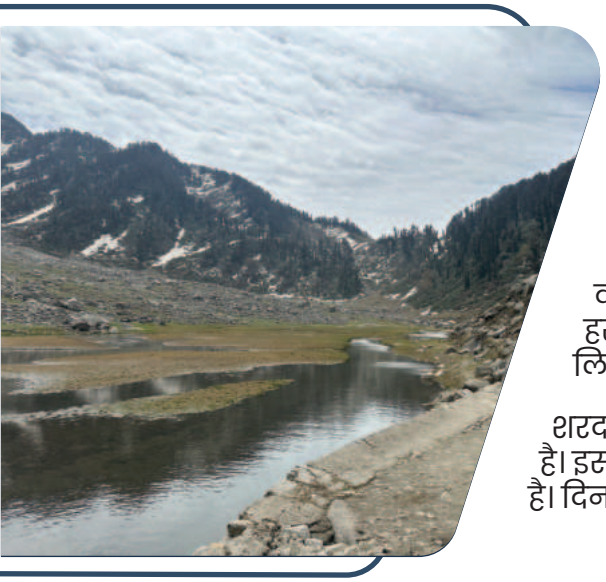

आरंभ स्थल

यह ट्रेक धर्मशाला से 27 कि.मी. तथा करेरी गांव से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित नौली पुल से आरंभ होता है। करेरी गांव में एक वन विभाग का विश्राम गृह, निजी अतिथि गृह और कैम्प आदि उपलब्ध हैं।

घूमने का सर्वोत्तम समय

वसंत ऋतु (मार्च से जून), यात्रा के लिए एक उपयुक्त समय है। रंग-विरंगे फूलों, हरी-भरी घाटियों तथा बर्फ से ढकी चोटियों के साथ सुहावना मौसम, ट्रैकिंग के लिए उत्तम वातावरण प्रदान करता है।

शरद ऋतु (सितम्बर से नवम्बर) भी ट्रेक के लिए सबसे अच्छा मौसम माना जाता है। इस समय सुहावना मौसम, आसपास के पहाड़ों का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। दिन के समय तापमान मध्यम, जबकि रात में ठंडा रहता है।

कैसे पहुंचें

वायु मार्ग द्वारा 13 कि.मी. की दूरी पर स्थित गग्गल हवाई अड्डा, धर्मशाला का निकटतम हवाई अड्डा है। यहाँ से टैक्सी या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके करेरी गाँव तक पहुंचा जा सकता है।

रेल मार्ग द्वारा निकटतम ब्रॉड-गेज रेलवे स्टेशन, पठानकोट कैंट रेलवे स्टेशन धर्मशाला से 88 कि.मी. की दूरी पर है जो भारत के सभी प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। निकटतम नैरो-गेज रेलवे स्टेशन कांगड़ा मंदिर रेलवे स्टेशन है। इन स्थानों से करेरी गाँव के लिए टैक्सी और बस सेवा उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग द्वारा धर्मशाला से करेरी गाँव की दूरी 24 कि.मी. है जो सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

साइबर सुरक्षा

साइबर सुरक्षा कंप्यूटर, सर्वर, मोबाइल, नेटवर्क, डेटा तथा इंटरनेट से जुड़े अन्य उपकरणों को दुर्भाविनापूर्ण हमलों और अनधिकृत पहुंच से बचाने की एक अनवरत प्रक्रिया है।

साइबर सुरक्षा के प्रकार

- **नेटवर्क सुरक्षा:** कंप्यूटर नेटवर्क को घुसपैठियों से बचाना।
- **एप्लिकेशन सुरक्षा:** सॉफ़्टवेयर और उपकरणों को खतरों से सुरक्षित करना।
- **सूचना सुरक्षा:** डेटा की संपूर्णता और गोपनीयता को संग्रहण तथा ट्रांज़िट में सुरक्षित रखना।

इतिहास

प्रोद्योगिकी के विकास से साथ ही वायरस और साइबर खतरों का भी जन्म हुआ। समय के साथ जैसे-जैसे तकनीकी उन्नति हुई, साइबर हमलों की संख्या व प्रकार भी बढ़े, जिसके परिणामस्वरूप मजबूत सुरक्षा उपायों का विकास हुआ।

साइबर सुरक्षा के मुख्य तत्व

- **जोखिम प्रबंधन:** संभावित खतरों की पहचान और उन्हें कम करना।
- **डेटा सुरक्षा:** सुनिश्चित करना कि संवेदनशील जानकारी, चोरी एवं छेड़छाड़ से सुरक्षित रहे।
- **घटना प्रतिक्रिया:** साइबर हमले की स्थिति में संगठन को कैसे व क्या प्रतिक्रिया करनी चाहिए।

साइबर सुरक्षा के लाभ

डेटा प्रबंधन में, संवेदनशील एवं व्यक्तिगत डेटा की चोरी से सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना तथा डेटा उल्लंघनों अथवा रैनसमवेयर आदि हमलों से वित्तीय नुकसान को रोकना।

साइबर सुरक्षा के खतरे

साइबर खतरों का रूप लगातार बदल रहा है। सामान्य उदाहरणों में मैलवेयर, फ़िशिंग और रैनसमवेयर आदि शामिल हैं, जो उचित सुरक्षा के बिना गंभीर हानि पहुंचा सकते हैं।

प्रमुख साइबर हमले

भारत में कुछ साइबर हमले जैसे कि "आई लव यू" वायरस (2000), "स्टक्सनेट वर्म" (2010) और "वाना क्राई" रैनसमवेयर हमला (2017) उल्लेखनीय हैं।

साइबर सुरक्षा चुनौतियाँ और सर्वोत्तम प्रथाएँ

साइबर खतरों की तेजी से बदलती प्रकृति एक बड़ी चुनौती है। नियमित रूप से सॉफ़्टवेयर अपडेट करना, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना और सुरक्षा जागरूकता को बढ़ाना जैसे उपाय अपनाना बहुत ही आवश्यक हैं।

सरकारी पहल

भारतीय सरकार ने साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं जिनमें मुख्यत:

- वर्ष 2000 में CERT-In की स्थापना
- वर्ष 2013 में राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति की शुरुआत
- राष्ट्रीय साइबर समन्वय केंद्र की स्थापना
- "साइबर स्वच्छता केंद्र" जैसे सुरक्षा जागरूकता अभियानों के साथ लोगों को शिक्षित करना

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र (एन.आई.सी.), सरकार के नेटवर्क्स को सुरक्षित रखने और सरकारी डेटा एवं संचार की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एन.आई.सी. के प्रयासों में मुख्यतः सुरक्षा प्रोटोकॉल लागू करना, सुरक्षा ऑडिट की अनुपालना तथा विभिन्न सरकारी विभागों में साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल हैं।

निष्कर्ष

आज की डिजिटल दुनिया में, साइबर सुरक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है जो जानकारी, गोपनीयता और विश्वास की रक्षा करता है।

पुरस्कार एवं सम्मान

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश को दो परियोजनाओं, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की जी.ए.सी. - एम.आई.एस. (शिकायत अपीलीय समिति) और हिमाचल प्रदेश स्कूल सुरक्षा एम.आई.एस./मोबाइल ऐप को प्रतिष्ठित जेम्स ऑफ डिजिटल इंडिया पुरस्कार 2024 (विश्लेषकों की पसंद) से सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह 26 जुलाई, 2024 को द क्लेरिजेस होटल, नई दिल्ली में कोयस एज (Coeus Age) द्वारा आयोजित किया गया। श्री संदीप सूद (वरिष्ठ निदेशक आई.टी.), श्री संजय कुमार (वरिष्ठ निदेशक आई.टी.), श्री संजय कुमार (निदेशक आई.टी.), श्री मंगल सिंह (संयुक्त निदेशक आई.टी.) तथा श्री आशीष शर्मा (संयुक्त निदेशक आई.टी.) द्वारा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश की ओर से पुरस्कार प्राप्त किए।

फॅमिली कनैक्ट

- पलाक्षा सुपुत्री श्रीमती उपासना एवं श्री सर्वजीत कुमार (वैज्ञानिक-सी) ने 04 अगस्त, 2024 को अपना जन्मदिन मनाया।
- नायशा नेगी सुपुत्री श्रीमती सुनैना एवं श्री पृथ्वी राज नेगी (वैज्ञानिक-सी) ने 16 अगस्त, 2024 को अपना जन्मदिन मनाया।

मिहिका शर्मा सुपुत्री श्रीमती मोनिका एवं श्री आशीष शर्मा (वैज्ञानिक-डी) ने 19 अगस्त, 2024 को अपना जन्मदिन मनाया।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, प्रिय पलाक्षा, नायशा एवं मिहिका को उनके जन्मदिन एवं गौरवशाली भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं देता है।

परामर्श : श्री अजय सिंह चहल

संवाद पत्र टीम

मुख्य संपादक : श्री विनोद कुमार गर्ग
संपादक : श्री भूपिंदर पाठक, श्री अखिलेश भारती,
श्री बृजेन्द्र कुमार डोगरा
डिजाईन एवं रचनात्मक कलाएं : श्री सर्वजीत कुमार

**सपने वो नहीं जो आप सोते समय देखते हैं,
बल्कि सपने वो हैं जो आपको सोने नहीं देते।**

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र
हिमाचल प्रदेश राज्य केन्द्र, छठी मंजिल, आम्सडिल बिल्डिंग
हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171002
sio-hp@nic.in +91-177-2624045
https://himachal.nic.in

योगदानकर्ता
श्री संदीप सूद
श्री भूपिंदर पाठक
सुश्री पूजा मान